University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme)

B.A. -Hindi

III & IV Semester

Examination-2025-26

As per NEP – 2020

जयपुर
01/9/25
01/9/25

बी.ए. हिन्दी – तृतीय सेमेस्टर
प्रथम प्रश्नपत्र –रीतिकाव्य

1 क्रेडिट –25 अंक
6 क्रेडिट–150 अंक
प्रश्न प्रत्र –120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objective)	1. विद्यार्थियों को रीतिकाल की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. रीतिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. रीतिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना। 4. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)	1.रीतिकालीन परिवेश : राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे। 2. रीतिकालीन प्रमुख कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे। 3. रीतिकालीन साहित्य सम्बन्धी शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खंडों (अ, ब, स) में विभक्त है।

खंड-अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।

खंड-ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2,3 एवं 4 में निर्धारित पाठ से कुल 04 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खंड-स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6, 7, 8, 9निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछे जाएँगे। प्रत्येक प्रश्न 15अंक का होगा।

इकाई - 1

रीतिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
रीतिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक)
रीतिकालीन काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ
रीतिकाव्य की प्रमुख धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई - 2

केशवदास – रामचन्द्रिका (संपादक – लाला भगवानदीन) – रावण–अंगद संवाद

बिहारी – बिहारी रत्नाकर (संपादक – जगन्नाथदास रत्नाकर)

1. मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
2. पाइ महावर दैंन कौं नाइनि बैठी आइ।
3. नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं बिकासु इहिं काल।
4. मंगलु बिंदु सुरंगु, मुखु ससि, केसरि आड़ गुरु।
5. बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन–तन माँह।
6. तंत्री–नाद, कबित्त–रस, सरस राग, रति–रंग।
7. कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।
8. आवत जात न जानियतु, तेजहिं तजि सियरानु।
9. बड़े न हूजै गुननु बिनु बिरद–बड़ाई पाइ।
10. इत आवति चलि जाति उत चली, छसातक हाथ।

देव

1. झहरि–झहरि झीनी बूँद हैं परति मानौ।
2. डार द्रुम पलना, बिछौना नव पल्लव के।
3. कालिन्दी–कूल भयो अनुकूल।
4. खेलत फाग खिलार खरे अनुराग भरे बड़भाग कन्हाई।
5. जब तं कुँवर कान्ह ! रावरी कला निधान।

इकाई - 3

भूषण

1. साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धारि सरजा शिवाजी जंग जीतन चलत हैं।
2. कामिनि कंत सों जामिनि चंद सो, दामिनि पावस मेघ घटा सों।
3. उतरि पलंग ते न दियो है धरा पै पग, तेऊ सगबग निसि दिन चली जाती हैं।
4. सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग, ताहि खरो कियो छ हजारिन के नियरे।
5. ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी, ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

घनानन्द

1. उर–भौन में मौन को घूँघट कै दुरि बैठी बिराजति बात बनी।
2. हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
3. परकाजहि देह को धारि फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ।
4. अति सूधो सनेह को मारग है।
5. अंतर उदेग दाह, आँखिन प्रबाह आँसू।

आलम

1. जा थल कीन्हें बिहार अनेकन, ता थल काँकरी बैठि चुन्यौ करैं।
2. चंद को चकोर देखै निसि दिन को न लेखै...
3. कंचन में आँच गई चूनो चिनगारी भई...
4. चारु तमाल प्रसून लता किधौं, स्याम घटा सँग बिज्जुल गोरी।
5. गुन रूप निधान बिचित्र बधू, हित प्यारी पिया मधु गंजन की।

इकाई - 4

पद्माकर

1. कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में...
2. फाग के भीरे अभीरन ते गहि गोबिन्द लै गई भीतर गोरी।
3. देखु 'पदमाकर' गुबिंद की अमित छवि...
4. चपला चलाकैं चहूँ ओरन तें चाह–भरी...
5. खेलिये फाग निसंक ह्वै आज मयंकमुखी कहैं भाग हमारो।

सेनापति

1. वृष कौं तरनि तेज सहसो किरन करि...
2. सारंग धुनि सुनावै घन रस बरसावै...
3. सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है...
4. कालतैं कराल कालकूट कंठ मॉझ लसैं...
5. कोह कौं घटाइ, लोभ मोह न मिटाइ काम...

अनुशंसित ग्रंथ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र (संपादक), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. रीति काव्यधारा – डॉ. रामचन्द्र तिवारी (संपादक), विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
4. बिहारी रत्नाकर – श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर'(संपादक), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. रीतिकाव्य – नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. रीतिकाव्य की भूमिका – डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. हिंदी रीति साहित्य – डॉ. भगीरथ मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।

Dy. Registrar

बी.ए. हिन्दी – तृतीय सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्नपत्र – काव्यशास्त्र

1 क्रेडिट 25 अंक
6 क्रेडिट 150 अंक
प्रश्नपत्र 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

उद्देश्य (Objective)	1. भारतीय काव्यशास्त्र की समृद्ध परम्परा एवं विकास–क्रम का परिचय कराना। 2. अलंकार, छंद, रस आदि के अध्ययन द्वारा साहित्य के कलात्मक पक्ष की गहन समझ एवं कौशल का विकास करना। 3. साहित्य के निर्माण में प्रयुक्त काव्यशास्त्रीय तत्त्वों का ज्ञान कराना। 4. रचनात्मक कौशल का विकास कराना ।
अधिगम प्रतिफल (Learning. Outcome)	1. भारतीय काव्यशास्त्र के अनुशीलन से काव्य–निर्माण प्रविधि में पारंगत होंगे। 2. काव्य–रचना में प्रयुक्त काव्यशास्त्रीय तत्त्वों से अवगत होकर सृजनात्मक लेखन करेंगे। 3. काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांतों से परिचित हो सकेंगे। 4. काव्यशास्त्र की परम्परा से अवगत होकर साहित्य में नवीन शोध दृष्टि का विकास करेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।
खण्ड–अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।
खण्ड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 लघुत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जायेगा। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा। अधिकतम शब्द सीमा 200
खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबन्धात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जायेगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा। अधिकतम शब्द सीमा 400

इकाई 1

काव्य लक्षण, काव्य हेतु, काव्य प्रयोजन, काव्य के रूप, काव्यगुण

इकाई 2

रस – परिभाषा, अवयव, प्रकार एवं उदाहरण।
अलंकार – परिभाषा, प्रमुख अलंकार – अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, विरोधाभास, विभावना (उदाहरण सहित)
छंद – परिभाषा, तत्त्व, प्रमुख छंद – दोहा, सोरठा, चौपाई, कवित्त, सवैया, रोला, कुंडलिया (उदाहरण सहित)

इकाई 3

रस सिद्धांत – रसनिष्पत्ति एवं उसके विभिन्न व्याख्याकार
अलंकार सिद्धांत – प्रमुख आचार्यों द्वारा प्रतिपादित अलंकार संबंधी विवेचन
रीति सिद्धांत – प्रमुख स्थापनाएँ, रीति के भेद

इकाई 4

ध्वनि सिद्धांत – प्रमुख आचार्य एवं स्थापनाएँ, ध्वनि के भेद
वक्रोक्ति सिद्धांत – प्रमुख स्थापनाएँ, वक्रोक्ति के भेद
औचित्य सिद्धांत – प्रमुख स्थापनाएँ, औचित्य के भेद

अनुशंसित ग्रंथ–

1. काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. भारतीय काव्यशास्त्र – तारकनाथ बाली, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

3. भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज – राममूर्ति त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. भारतीय साहित्यशास्त्र की नई रूपरेखा – राधावल्लभ त्रिपाठी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
5. भारतीय काव्यशास्त्र – योगेन्द्र प्रताप सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त – गणपतिचन्द्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज

बी.ए. हिन्दी – चतुर्थ सेमेस्टर

प्रथम प्रश्नपत्र – कथेतर गद्य विधाएँ

1 क्रेडिट 25 अंक

6 क्रेडिट 150 अंक

प्रश्न पत्र 120 अंक

आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

उद्देश्य (Objective)	1. विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य की कथेतर गद्य विधाओं – नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, रिपोर्ताज, आत्मकथा आदि से अवगत कराना। 2. नाटक, एकांकी आदि कथेतर विधाओं के स्वरूप एवं उनकी विकास यात्रा से अवगत कराना। 3. नाटक, एकांकी आदि कथेतर विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं एवं रचनाकारों से परिचय कराना। 4. विद्यार्थियों में नाटक, एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाओं के अध्ययन द्वारा संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)	1. विद्यार्थी नाटक, एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाओं के स्वरूप व विकास से परिचित हो सकेंगे। 2 हिन्दी साहित्य की कथेतर विधाओं के अध्ययन द्वारा रचनात्मक कौशल का विकास करेंगे। 3. नाटक, एकांकी एवं अन्य कथेतर विधाओं का व्यावहारिक प्रयोग करना सीखेंगे। 4. हिंदी साहित्य की समृद्ध गद्य परंपरा से अवगत होकर विभिन्न रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।

खण्ड–अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।

खण्ड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2 में निर्धारित पाठ से 2 गद्यांश (आन्तरिक विकल्प रहित) तथा इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से 2 गद्यांश (एक रचना से एक, आन्तरिक विकल्प सहित) व्याख्या हेतु पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबन्धात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जायेगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई 1

नाटक – परिभाषा एवं तत्त्व, हिन्दी के प्रमुख नाटक एवं नाटककार

एकांकी – परिभाषा एवं तत्त्व, हिन्दी की प्रमुख एकांकी एवं एकांकीकार

संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज, आत्मकथा का सामान्य परिचय

इकाई 2

नाटक – रक्तकमल – लक्ष्मी नारायण लाल

इकाई 3

एकांकी – उत्सर्ग – रामकुमार वर्मा

सीमा रेखा – विष्णु प्रभाकर

महाभारत की एक साँझ – भारतभूषण अग्रवाल

आत्मकथा – अपनी खबर (केवल शीर्षक अध्याय) – पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र

इकाई 4

रेखाचित्र –सरजू भैया – रामवृक्ष बेनीपुरी

संस्मरण – सुभद्रा कुमारी चौहान – महादेवी वर्मा

यात्रावृत्त – बहता पानी निर्मला – अज्ञेय

रिपोर्ताज – अदम्य जीवन – रांगेय राघव

अनुशंसित ग्रंथ –

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – संपादक : डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा
2. हिन्दी का गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. हिन्दी नाटक – बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी एकांकी – सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. हिन्दी गद्य विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज

University ... JAIPUR

बी.ए. हिन्दी – चतुर्थ सेमेस्टर

द्वितीय प्रश्नपत्र – राजस्थानी भाषा एवं साहित्य

1 क्रेडिट 25 अंक
6 क्रेडिट 150 अंक
प्रश्न प्रत्र 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन 30 अंक

उद्देश्य (Objective)	1. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य की समृद्ध परंपरा से अवगत कराना। 2. राजस्थान की विभिन्न बोलियों के बारे में विशद् जानकारी उपलब्ध कराना। 3. राजस्थानी साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचित कृतियों का गहन अध्ययन कराना। 4. राजस्थानी लोक साहित्य की विविधता एवं सरसता से परिचित कराना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcome)	1. राजस्थानी भाषा के विविध विधाओं का अनुशीलन कर सृजनात्मक लेखन कौशल विकसित करेंगे। 2. राजस्थानी भाषा के कवियों एवं कृतित्व का अध्ययन कर साहित्यिक संवेदना से संपृक्त होंगे। 3. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के प्रति रुचि जाग्रत कर सकेंगे। 4. राजस्थान की सामाजिक,सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझ सकेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।
खण्ड–अ के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिसमें संपूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का होगा।
खण्ड–ब के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 2, 3, 4, 5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से कुल 4 अवतरण (प्रत्येक इकाई से 2) आन्तरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड–स के अन्तर्गत प्रश्न संख्या 6, 7, 8, 9 निबंधात्मक प्रश्न हैं, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जायेगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई 1

राजस्थानी भाषा का उद्‌भव एवं विकास
राजस्थानी भाषा की प्रमुख बोलियाँ – मारवाड़ी, ढूंढाडी, हाड़ोती, मालवी, मेवाती, वागड़ी
राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक विशेषताएँ

इकाई 2

राजस्थानी साहित्य का काल–विभाजन
राजस्थानी काव्य का विकास – प्रारंभ काल, पूर्व मध्यकाल, उत्तर मध्यकाल, आधुनिक काल : प्रमुख प्रवृत्तियाँ, कवि एवं रचनाएँ
राजस्थानी गद्य का उद्‌भव एवं विकास, प्रमुख गद्य रचनाएँ

इकाई 3

ईसरदास कृत 'हालाँ झालाँ रा कुंडलिया' (संपादक – मोतीलाल मेनारिया)
आरम्भिक 30 छंद

इकाई 4

राजिया रा दूहा – (संपादक – नरोत्तमदास स्वामी)
आरम्भिक 100 छंद

अनुशंसित ग्रंथ –

1. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. मोतीलाल मेनारिया, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
2. राजस्थानी भाषा और साहित्य – डॉ. हीरालाल माहेश्वरी, आधुनिक पुस्तक भवन, कोलकाता
3. राजस्थानी भाषा एवं साहित्य – प्रो. कल्याणसिंह शेखावत, त्रिवेणी पब्लिकेशन, जोधपुर
4. राजस्थानी व्याकरण और साहित्य का इतिहास – पद्मश्री सीताराम लालस, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

Dy. R[illegible]
(Academic)
University of Rajasthan

5. राजस्थानी व्याकरण – डॉ. सोहनदान चारण, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
6. राजस्थानी सबद कोस, भाग 1 की भूमिका – संपादक : पद्मश्री सीताराम लालस, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR